National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 61-64
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

पीयूष जैन
शोधार्थी,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड-विश्वविद्यालय, छतरपुर (म. प्र.)

Correspondence:
पीयूष जैन
शोधार्थी,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड-विश्वविद्यालय, छतरपुर (म. प्र.)

"डिजिटल युग में हिंदी यात्रा-साहित्य का बदलता स्वरूप : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

पीयूष जैन

शोध सार -

यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। हम अगर मानव इतिहास पर नज़र डालें तो पाएँगे कि मनुष्य के विकास की गाथा में यायावरी का महत्वपूर्ण योगदान है। अपने जीवन काल में हर आदमी कभी-न-कभी कोई-न-कोई यात्रा अवश्य करता है लेकिन सृजनात्मक प्रतिभा के धनी अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर यात्रा-साहित्य की रचना करने में सक्षम हो पाते हैं। यात्रा-साहित्य का उद्देश्य लेखक के यात्रा अनुभवों को पाठकों के साथ बाँटना और पाठकों को भी उन स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करना है। इन स्थानों की प्राकृतिक विशिष्टता, सामाजिक संरचना, सामाज के विविध वर्गों के सह-संबंध, वहाँ की भाषा, संस्कृति और सोच की जानकारी भी इस साहित्य से प्राप्त होती है। पर यात्राएँ समय और तकनीक से आरामदेह बनी तो उसके ऊपर लिखा जाने वाले साहित्य के स्वरूप संरचना में भी परिवर्तन आया।

परंपरागत हिंदी यात्रा-साहित्य का मूल आधार लेखक की आत्मानुभूति रहा है। यात्री केवल स्थानों का वर्णन नहीं करता, बल्कि अपनी संवेदनाओं, अनुभूतियों और मानसिक प्रतिक्रियाओं को साहित्यिक रूप देता है। पारंपरिक यात्रा साहित्य के अंतर्गत ऐसा यात्रा साहित्य रचा गया है जिसमे मूलतः स्मृति तत्त्व का अधिक प्रयोग हुआ है। जबकि डिजिटल युग ने यात्रा साहित्य को न केवल नए माध्यम दिए हैं, बल्कि लेखक, पाठक और पाठ—तीनों की पारंपरिक भूमिकाओं में बदलाव किया है।

बीजशब्द – परंपरा, डिजिटलयुग, साहित्यिक गुणवत्ता, संस्थागत अनुमति, ब्लॉग, प्राकृतिक विशिष्टता।

प्रस्तावना

मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है, जिज्ञासा की पूर्ति हेतु उसने शुरुआत में यात्रा प्रारम्भ कर दी। मनुष्य ने आदिम काल से ही यात्राएँ अरम्भ की, कभी भोजन की तलाश में, कभी ज्ञान की खोज में तो कभी सहज जिज्ञासु होकर। और इन्ही यात्राओं के फल स्वरुप वह विकसित हो पाया। और आज हमें जिस रूप में दिखाई देता है वह यात्राओं का ही परिणाम है। अगर कहना चाहे तो अतिशयोक्ति न होगी कि मनुष्य का इतिहास यात्रा का इतिहास है। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार *"घूमना-फिरना केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मानव सभ्यता को समझने का माध्यम है; यात्रा-साहित्य उसी अनुभूति की साहित्यिक अभिव्यक्ति है।"*[1]

जब मनुष्य साधन संपन्न भाषा और लेखनी इत्यादि अविष्कारों से परिचित हो चला तब उसने इन यात्रा के अनुभवों को लिखने का विचार किया और परिणाम स्वरुप साहित्य को एक नयी विधा मिली जिसे यात्रा वृत्तान्त या यात्रा साहित्य के रूप में अभिहित किया जाता है। "जब कोई व्यक्ति अपनी यात्रा की अनुभूतियों को कलात्मक रूप देकर संवेदना के साथ प्रस्तुत करता है तब इसे यात्रा साहित्य के नाम से अभिहित किया जाता है।"[2] यात्रा साहित्य अथवा यात्राओं का लिखित रूप में उल्लेख ईसा की पहली-दूसरी शताब्दी के प्रारंभ से ही प्राप्त होने लगे हैं।

"यात्राएँ भारतीय संस्कृति का भी अभिन्न हिस्सा रही हैं । विद्या प्राप्ति के लिए छात्र बाल्यावस्था में ही नगर से दूर यात्रा करके वन में जाकर गुरु से शिक्षा लेते थे ।यहाँ से उनके जीवन में यात्रा का संस्कार दिखाई देने लगता था"[3] ।और फिर अलग अलग भाषाओं में यात्रा साहित्य लिखा गया । जीवन को भी यात्रा के रूप में ही देखा गया है जैसा की राहुल सांस्कृत्यायन ने अपनी आत्मकथा को ही 'मेरी जीवन यात्रा' का नाम दिया। "इसी क्रम में परंपरा ने आधुनिकता का रूप लिया तो यात्रा ने भी अपना स्वरुप बदला और यात्रा के स्वरुप बदलने पर यात्रा साहित्य के स्वरुप में बदलाव आया। पहले यात्रा धार्मिक भाव से मुख्यतः की जाती थी अब यात्रा धार्मिक, आर्थिक, मनोरंजन के लिए हो गयी है। "भारत के युवा मानसिक शांति के लिए समुद्रों और पहाड़ो पर जाते है और उसे ट्रेवल का नाम देते है । साथ में तकनीक का प्रवेश भी हुआ ऐसे में इस शोधपत्र में हम परंपरा से आधुनिक डिजिटल युग में यात्रा और यात्रा साहित्य में क्या परिवर्तन हुए इसे देखेंगे ।

पारंपरिक यात्रा साहित्य

परंपरागत हिंदी यात्रा-साहित्य का मूल आधार लेखक की आत्मानुभूति रहा है। यात्री केवल स्थानों का वर्णन नहीं करता, बल्कि अपनी संवेदनाओं, अनुभूतियों और मानसिक प्रतिक्रियाओं को साहित्यिक रूप देता है। पारंपरिक यात्रा साहित्य के अंतर्गत ऐसा यात्रा साहित्य रचा गया है जिसमे मूलतः स्मृति तत्त्व का अधिक प्रयोग हुआ है, तब के यात्रा संस्मरण में लेखक आत्मानुभूति, सांस्कृतिक दृष्टि से लिखते हुए भाषा साहित्यिक रखते थे, वो पाठको को ध्यान में रखते हुए लेखन कार्य करते थे इसलिए जब भी आप पारंपरिक यात्रा साहित्य पढ़ते है तो आपके नक़्शे, मार्ग और उनकी कठिनाइयाँ स्पष्ट मिल जाएगी । इन कृतियों में यात्रा के स्थानों पर आधारित दर्शन, आत्मचिंतन और इतिहास भी मिलता है। परंपरागत यात्रा-साहित्य मूलतः किताब पर आधारित था और उसका पाठक-वर्ग कम किंतु जाग्रत था।

लेखक और पाठक के बीच संवाद एकमार्गी था, पाठक का फीडबैक तत्काल यात्रा-लेखक तक नहीं पहुँचती थी।

यह साहित्य पत्रिकाओं या पुस्तकों के माध्यम से प्रकाशित होता था, जिससे लेखन में ठहराव, संपादकीय अनुशासन और साहित्यिक गंभीरता बनी रहती थी।

परंपरागत यात्रा-साहित्य में यात्रा व्यय, समय और श्रमसाध्य कार्य था ।

यातायात, संचार और प्रकाशन के सीमित साधनों के कारण—

- यात्रा-वृत्तांत देर से प्रकाशित होते थे
- अनुभवों की स्मृति पर अधिक निर्भरता रहती थी
- दृश्य सामग्री (चित्र, मानचित्र) का अभाव रहता था

इन सीमाओं के बावजूद, यह साहित्य गहन, चिंतनशील और स्थायी मूल्य वाला माना जाता है।

परंपरागत हिंदी यात्रा-साहित्य अनुभव की गहराई और सांस्कृतिक चेतना आज के मुकाबले बहुत रहती थी इसलिए आज भी परंपरागत यात्रा साहित्य आज के डिजिटल यात्रा लेखन करने वालो के समक्ष प्रतिमान के रूप में आता है जिसे मानक बना कर आज के यात्रा लेखक लेखन कार्य करते है ।

डिजिटल युग में हिंदी यात्रा-साहित्य

डिजिटल युग सूचना-प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास के परिणाम स्वरुप बना है, जिसमें इंटरनेट, कंप्यूटर, स्मार्टफोन और डिजिटल प्लेटफॉर्म आदि प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इस युग ने संचार, सूचना-संप्रेषण और अभिव्यक्ति के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। साहित्य, जो अब तक मुख्यतः मुद्रित माध्यमों पर निर्भर था, डिजिटल तकनीक के माध्यम से एक नए तीव्र विस्तार और तेज़ गति को प्राप्त करता है। परिणामस्वरूप साहित्य की रचना, प्रकाशन और पाठन - तीनों प्रक्रियाएँ अधिक सहज,त्वरित और व्यापक हो गई हैं।

डिजिटल युग में ब्लॉग, वेबसाइट, ई-पत्रिकाएँ और सोशल मीडिया साहित्यिक अभिव्यक्ति के नए मंच के रूप में उभरे हैं। विशेष रूप से हिंदी यात्रा-साहित्य ने इन माध्यमों के माध्यम से व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँच बनाई है।

इन मंचों पर प्रकाशित यात्रा-वृत्तांत अधिक तात्कालिक, अनुभव-प्रधान और दृश्य-सामग्री (चित्र, वीडियो) से युक्त होते हैं, जिससे पाठक को यात्रा का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होता है। इस प्रकार साहित्य का स्वरूप बहु-माध्यमीय (Multimedia) बनता जा रहा है। जैसे अभी नीरज मुसाफिर ने किताबें अवश्य लिखी पर उन्होंने शुरूआती दौर में ब्लॉग राइटिंग की और उससे अपनी पहचान बनाई ।

अब लेखन प्रक्रिया भी इसी डिजिटल युग के चलते अधिक सरल हो गयी है, लेखक आजकल मोबाइल कैमेरा से अच्छी क्वालिटी की फोटो लेते हैं और फिर फ़ोन में तथ्य नोट कर लेते हैं, बाद में फोटो विडियो और लिखे तथ्यों के आधार पर यात्रा लेखन करते है तो उसमे सजीवता आ जाती है । लेखन प्रक्रिया के अलावा अब प्रकाशन भी ज्यादा लोकतान्त्रिक हो चला है अब लेखक किसी प्रकाशक के पास नहीं जाते बल्कि डिजिटल प्लेटफार्म पर अपना यात्रा लेखन करते हैं जिसमे उन्हें फोटो, विडियो, नक्शा इत्यादि अटेच करने की सुविधा भी मिलती है । तो "अब न लेखक के लिये प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है न संस्थागत मान्यता की आवश्यकता। कोई भी व्यक्ति यात्रा से जुड़े अनुभव , विचार और संवेदना परक संस्मरण, वृत्तान्त सार्वजानिक मंच पर प्रस्तुत कर सकता है"[5]

इससे नए लेखकों और रचनाकारों को भी स्थान मिला है साथ ही यात्रा लेखन में विविध दृष्टिकोण, नया भूगोल और अनछुए अनुभव जिन्हें पहले मुख्यधारा में सम्मिलित नहीं किया जाता था सम्मिलित हुए हैं । हालाँकि इस व्यवस्था में साहित्यिक गुणवत्ता और सम्पादकीय अनुशासन छूटता नज़र आता है ।

डिजिटल युग में पाठक और लेखक के संबंधों में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। जहाँ परंपरागत साहित्य में यह संबंध एकमार्गी

एकांगी था, वहीं डिजिटल माध्यमों में पाठक-लेखक सम्बन्ध द्विमार्गी बन गया है। जहाँ पाठक सक्रिय सहयोगी बन गया है । कॉमेंट्स, प्रतिक्रियाओं और शेयर करने की प्रक्रिया के माध्यम से पाठक लेखक से सीधे संवाद स्थापित करता है। इससे लेखक की भूमिका केवल सर्जक की न होकर एक संवादकर्ता और प्रस्तुतकर्ता की भी हो गई है। यह परिवर्तन साहित्य को अधिक जीवंत बनाता है, परंतु साथ ही लोकप्रियता और साहित्यिक मूल्य के बीच संतुलन की चुनौती भी प्रस्तुत करता है। डिजिटल युग ने साहित्य को न केवल नए माध्यम दिए हैं, बल्कि लेखक, पाठक और पाठ—तीनों की पारंपरिक भूमिकाओं में बदलाव किया है ।

डिजिटल युग में हिंदी यात्रा-साहित्य का नया स्वरूप

ब्लॉग आधारित यात्रा-वृत्तांत - डिजिटल युग में ब्लॉग हिंदी यात्रा-साहित्य के प्रमुख माध्यम के रूप में उभरे हैं। ब्लॉग आधारित यात्रा-वृत्तांत व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होते हैं, जिनमें लेखक अपनी यात्रा के विविध पक्षों—स्थान, संस्कृति, भोजन, लोगों और भावनात्मक अनुभूतियों—को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है। इन लेखों में आत्मकथात्मकता तो बनी रहती है, परंतु भाषा अपेक्षाकृत सहज, संवादात्मक और पाठक-अनुकूल हो गई है। ब्लॉग ने यात्रा-लेखन को तात्कालिकता और व्यापक पहुँच प्रदान की है।

सोशल मीडिया पोस्ट, थ्रेड और कैप्शन शैली- सोशल मीडिया के प्रभाव से हिंदी यात्रा-साहित्य का स्वरूप और अधिक संक्षिप्त एवं प्रभावी हुआ है। फेसबुक पोस्ट, एक्स (ट्विटर) थ्रेड, इंस्टाग्राम कैप्शन आदि के माध्यम से यात्रा-अनुभव छोटे-छोटे खंडों में अभिव्यक्त होने लगे हैं। यहाँ साहित्यिक विस्तार के स्थान पर संवेदनात्मक तीव्रता और दृश्यात्मक संकेत अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। यह शैली पारंपरिक यात्रा-वृत्तांत से भिन्न होते हुए भी नई पीढ़ी के पाठकों को आकर्षित करती है।

यूट्यूब / रील आधारित दृश्य-यात्रा कथाएँ - डिजिटल युग में यात्रा-साहित्य केवल पाठ तक सीमित नहीं रहा, बल्कि दृश्य-माध्यम के रूप में भी विकसित हुआ है। यूट्यूब वीडियो और रील्स के माध्यम से यात्रा अब "देखी और सुनी जाने वाली कथा" बन गई है। इन दृश्य-यात्रा कथाओं में भाषा, चित्र, ध्वनि और संगीत का सम्मिलित प्रयोग होता है, जिससे पाठक/दर्शक को यात्रा का प्रत्यक्ष अनुभव मिलता है। यह बहु-इंद्रियात्मक प्रस्तुति यात्रा-साहित्य के पारंपरिक स्वरूप का विस्तार है।

त्वरित अनुभव और "लाइव" यात्रा-लेखन- डिजिटल माध्यमों ने यात्रा-लेखन को तात्कालिक बना दिया है। अब लेखक यात्रा के दौरान ही अपने अनुभव साझा कर सकता है—जिसे "लाइव" यात्रा-लेखन कहा जा सकता है। इससे अनुभव की ताजगी बनी रहती है और पाठक यात्रा-प्रक्रिया का तत्काल सहभागी बन जाता है। हालांकि, इस त्वरित लेखन में गहन चिंतन और पुनरावलोकन की कमी की संभावना भी रहती है, जो आलोचनात्मक दृष्टि से विचारणीय है।

संवादात्मक और बहु-माध्यमीय प्रस्तुति- डिजिटल युग में हिंदी यात्रा-साहित्य का एक प्रमुख गुण उसका संवादात्मक स्वरूप है। पाठक टिप्पणियों, प्रश्नों और प्रतिक्रियाओं के माध्यम से लेखक से सीधे जुड़ता है। इसके साथ ही पाठ, चित्र, वीडियो, मानचित्र और लिंक के संयुक्त प्रयोग से यात्रा-विवरण बहु-माध्यमीय (Multimedia) बन गया है। इस प्रकार यात्रा-साहित्य अब केवल रचना नहीं, बल्कि एक सतत संवाद और सहभागिता की प्रक्रिया बन गया है।

डिजिटल युग में हिंदी यात्रा-साहित्य का नया स्वरूप तात्कालिकता, दृश्यात्मकता और संवादात्मकता के माध्यम से परंपरागत साहित्यिक ढाँचे का विस्तार करता है, न कि उसका पूर्ण निषेध ।

भाषा, शैली और शिल्प में परिवर्तन

बोलचाल की हिंदी का बढ़ता प्रयोग - डिजिटल युग में हिंदी यात्रा-साहित्य की भाषा में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है। परंपरागत संस्कृतनिष्ठ और साहित्यिक हिंदी के स्थान पर अब बोलचाल की, सहज और अनौपचारिक हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। इसका प्रमुख कारण डिजिटल माध्यमों पर उपस्थित व्यापक और विविध पाठक-वर्ग है। यह भाषा पाठक को लेखक के अधिक निकट लाती है तथा यात्रा-अनुभव को आत्मीय और संवादात्मक बनाती है।

मिश्रित भाषा (हिंग्लिश) का प्रभाव- डिजिटल मंचों पर हिंदी यात्रा-लेखन में हिंग्लिश का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अंग्रेज़ी के सामान्य शब्द, तकनीकी पद और पर्यटन-संबंधी शब्दावली हिंदी वाक्यों के साथ प्रयुक्त हो रही है। यह मिश्रित भाषा एक ओर आधुनिक जीवन-शैली और वैश्विक संस्कृति को प्रतिबिंबित करती है, वहीं दूसरी ओर हिंदी की शुद्धता और साहित्यिक गरिमा को लेकर विमर्श भी उत्पन्न करती है। इस परिवर्तन को भाषा के जीवंत और गतिशील स्वरूप के रूप में भी देखा जा सकता है।

संक्षिप्तता, दृश्यात्मकता और भाव-प्रधान लेखन - डिजिटल युग में पाठक की समय-सीमा और ध्यान-क्षमता को ध्यान में रखते हुए यात्रा-लेखन अधिक संक्षिप्त और भाव-प्रधान हो गया है। लंबे वर्णनात्मक अनुच्छेदों के स्थान पर छोटे, प्रभावशाली वाक्य और अनुभूतिपरक अभिव्यक्तियाँ प्रचलित हो रही हैं। इसके साथ ही दृश्यात्मकता का महत्व बढ़ा है, जहाँ शब्दों के साथ दृश्य संकेत पाठक की कल्पना को अधिक सक्रिय करते हैं।

चित्र, वीडियो और लिंक का साहित्यिक उपयोग - डिजिटल हिंदी यात्रा-साहित्य की एक प्रमुख विशेषता चित्र, वीडियो और हाइपरलिंक का साहित्यिक उपयोग है। ये तत्व अब केवल सहायक सामग्री न होकर रचना का अभिन्न अंग बनते जा रहे हैं। चित्र और

वीडियो यात्रा-अनुभव को प्रत्यक्षता प्रदान करते हैं, जबकि लिंक पाठक को अतिरिक्त जानकारी और संदर्भों से जोड़ते हैं। इस प्रकार यात्रा-साहित्य का शिल्प बहु-माध्यमीय अभिव्यक्ति की दिशा में विकसित हुआ है।

डिजिटल युग में भाषा, शैली और शिल्प में आए परिवर्तन हिंदी यात्रा-साहित्य को अधिक संप्रेषणीय, संवादात्मक और दृश्य-प्रधान बनाते हैं, किंतु साथ ही साहित्यिक संतुलन की नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करते हैं।

डिजिटल यात्रा-साहित्य : संभावनाएँ और चुनौतियाँ

डिजिटल यात्रा-साहित्य की संभावनाएँ

1. नए रचनाकारों का उदय - डिजिटल युग ने यात्रा-लेखन को लोकतांत्रिक मंच प्रदान किया है, जहाँ नए और अप्रतिष्ठित रचनाकार भी बिना किसी संस्थागत बाधा के अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कर सकते हैं।

2. तात्कालिकता और जीवंतता -डिजिटल यात्रा-साहित्य की एक प्रमुख विशेषता उसकी तात्कालिकता है। लेखक यात्रा के दौरान या तुरंत बाद अपने अनुभव साझा कर सकता है, जिससे लेखन में ताजगी और जीवंतता बनी रहती है। पाठक भी यात्रा-अनुभव का लगभग सहयात्री बन जाता है।

3. व्यापक पाठक-समूह तक पहुँच - डिजिटल माध्यमों ने हिंदी यात्रा-साहित्य को भौगोलिक और भाषाई सीमाओं से मुक्त कर दिया है। अब यात्रा-वृत्तांत केवल पुस्तक-पाठकों तक सीमित न रहकर सोशल मीडिया, ब्लॉग और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वैश्विक पाठक-समूह तक पहुँच रहे हैं।

डिजिटल यात्रा-साहित्य की चुनौतियाँ

1. साहित्यिक गहराई का ह्रास - डिजिटल माध्यमों की त्वरित और संक्षिप्त प्रकृति के कारण कई बार यात्रा-लेखन में गहन चिंतन और साहित्यिक परिपक्वता का अभाव दिखाई देता है। तात्कालिक प्रतिक्रिया और लोकप्रियता की होड़ में लेखन सतही हो जाने का खतरा बना रहता है।

2. सतही वर्णन और प्रचारात्मक लेखन **-** डिजिटल यात्रा-साहित्य में एक बड़ी चुनौती प्रचारात्मक और उपभोक्तावादी लेखन की बढ़ती प्रवृत्ति है। पर्यटन प्रचार, ब्रांड सहयोग और सोशल मीडिया प्रभाव के कारण कई यात्रा-वृत्तांत अनुभव-प्रधान साहित्य के बजाय विज्ञापन-सरीखे प्रतीत होते हैं।

3. प्रामाणिकता का प्रश्न - डिजिटल मंचों पर प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांतों की प्रामाणिकता भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अतिरंजित अनुभव, चयनित दृश्य और संपादित कथाएँ पाठक को वास्तविकता से दूर ले जा सकती हैं।

डिजिटल यात्रा-साहित्य एक ओर विस्तार, जीवंतता और लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति की अपार संभावनाएँ प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरी ओर साहित्यिक गहराई, प्रामाणिकता और उद्देश्य की गंभीर चुनौतियाँ भी सामने लाता है।

निष्कर्ष –

इस अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग ने हिंदी यात्रा-साहित्य के स्वरूप, भाषा, विषयवस्तु और दृष्टिकोण—सभी स्तरों पर गहरा प्रभाव डाला है। परंपरागत यात्रा-साहित्य जहाँ आत्मानुभूति, सांस्कृतिक विश्लेषण और साहित्यिक गहराई पर आधारित था, वहीं डिजिटल यात्रा-साहित्य तात्कालिकता, दृश्यात्मकता और संवादात्मकता की ओर अग्रसर हुआ है।

डिजिटल माध्यमों ने यात्रा-साहित्य को लोकतांत्रिक बनाते हुए नए रचनाकारों, नए भूगोल और विविध अनुभवों को सामने लाने का अवसर दिया है। ब्लॉग, सोशल मीडिया और वीडियो प्लेटफॉर्म ने यात्रा-लेखन को बहु-माध्यमीय रूप प्रदान किया है, जिससे पाठक केवल पाठक न रहकर सहभागी बन गया है।

हालाँकि, इस परिवर्तन के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं—जैसे साहित्यिक गहराई का ह्रास, प्रचारात्मक लेखन और प्रामाणिकता का संकट। इस प्रकार डिजिटल हिंदी यात्रा-साहित्य एक ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रहा है, जहाँ परंपरा और नवाचार के बीच संतुलन आवश्यक हो गया है।

डिजिटल युग में हिंदी यात्रा-साहित्य परंपरा और तकनीक के संगम से विकसित हो रही एक ऐसी विधा है, जो साहित्य को अधिक व्यापक, सहभागी और समकालीन बनाती है, किंतु उसकी साहित्यिक आत्मा को सुरक्षित रखना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. सांकृत्यायन, राहुल. *घुमक्कड़ शास्त्र*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सिंह, नामवर. *साहित्य और समाज*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. शर्मा, रामविलास. *साहित्य और समाज*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. पचौरी, सुधीश. *उत्तर-आधुनिकता और साहित्य*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. वजाहत, असगर. *समय, समाज और साहित्य*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।